नए नियम में राज्य और वाचा

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दो

परमेश्वर का राज्य

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:20).....4

II. शुभ-सन्देश (2:17) 4

A. अर्थ (3:43).....4

B. परमेश्वर का राज्य (8:26).....5

1. अटल सम्प्रभुता (11:25).....5

2. खुलता हुआ राज्य (14:00).....5

C. विकसित होती हुई विशेषता (16:41).....6

1. इस्राएल की विफलताएँ (17:25).....6

2. इस्राएल की आशाएँ (20:45) 7

III. आगमन (28:17).....8

A. अपेक्षाएँ (29:14).....8

B. त्रि-स्तरीय विजय (41:56) 11

1. पराजय (43:00).....11

2. छुटकारा (55:17) 13

IV. सारांश (1:03:12).....14

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 15

उपयोग के प्रश्न 18

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अन्तराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अन्तराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

II. शुभ-सन्देश (2:17)

A. अर्थ (3:43)

सुसमाचार शब्द यूनानी संज्ञा *ईवांगलियोन* से आता है, जिसका अर्थ मानो "शुभ उदघोषणा" या एक "शुभ सन्देश" के जैसा है।

सुसमाचार परमेश्वर के राज्य के लिए विजय का शुभ-सन्देश अर्थ है। (1 शमूएल 31:9; 2 शमूएल 18:19; लूका 4:43).

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. परमेश्वर का राज्य (8:26)

परमेश्वर का राज्य विशेष रूप से नए नियम में सुसमाचार के साथ जुड़ा हुआ है। (मत्ती 4:23, 9:35, 24:14; लूका 4:43, 8:1, 16:16; प्रेरितों के काम 8:12).

पवित्रशास्त्र परमेश्वर के राज्य की ओर दो प्राथमिक तरीकों से संकेत करता है।:

1. अटल सम्प्रभुता (11:25)

पूरी सृष्टि परमेश्वर का राज्य है क्योंकि परमेश्वर ने सदैव राज्य किया है और सदैव जो कुछ उसने निर्मित किया है उसके ऊपर राज्य करेगा। (1 इतिहास 29:11; 1 तीमुथियुस 6:15).

स्वर्ग और पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर की अटल संप्रभुता है (1 राजा 8:27; यशायाह 6:1; 2 इतिहास 18:18; अय्यूब 1:6; भजन संहिता 82:1; दानिय्येल 7:9-10; लूका 22:30; प्रकाशितवाक्य 4:6).

2. खुलता हुआ राज्य (14:00)

खुलते हुए राज्य का संकेत उस विशेष तरीके की ओर संकेत करना है जिसमें परमेश्वर पूरे इतिहास के दौरान उसकी सृष्टि के ऊपर उसकी प्रभुता को प्रकट करता, दर्शाता या प्रदर्शित करता है।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने उसके आधिपत्य को अदन के बाग में दृश्य रूप में प्रकट किया, परन्तु शैतान ने आदम और हव्वा को राज्य के विरोध में एक गंभीर झटका देने के लिए नेतृत्व प्रदान किया।

पतन के फलस्वरूप, परमेश्वर ने मानवजाति को दो प्रतिद्वन्द्वी गुटों में विभाजित कर दिया।

अन्त में उन सभों के ऊपर जिन्होंने परमेश्वर का विरोध किया है, परमेश्वर की विजय होगी। (फिलिप्पियों 2:10-11).

C. विकसित होती हुई विशेषता (16:41)

1. इस्राएल की विफलताएँ (17:25)

परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वशंज् को राज्य के प्रेषण को पूरा करने के लिए चुना जिसे उसने सबसे पहले आदम और हव्वा को दिया था।

अब्राहम के वशंज की प्रत्येक पीढ़ी ने इस या उस तरीके से परमेश्वर को विफलता ही दिखाई।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस्राएल की विफलताएँ इतनी ज्यादा ज्वलन्त अवहेलना बन गई कि परमेश्वर उनके विरूद्ध न्याय को ले आया।

2. इस्राएल की आशाएँ (20:45)

इस्राएल ने ऐसे समय के लिए आशा व्यक्त की जब परमेश्वर उसके शत्रुओं को हरा देगा और उसके लोगों को गौरवशाली, विश्वव्यापी राज्य की आशीषों में छुटकारा देगा। (यशायाह 52:7).

इस्राएल की आशा से सम्बन्धित चार गुण (यशायाह 52:7) :

- सन्देशवाहक सिय्योन के लिए "शुभ समाचार को लाएंगे " और "शुभ सन्देश को लाएंगे"।

- मसीही प्रचार ने यशायाह में भविष्यद्वाणी किए हुए सन्देशवाहक के “शुभ-सन्देश” को पूरा किया। (रोमियों 10:15)

- यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि शुभ-सन्देश "शान्ति" और "उद्धार" की उदघोषणा होगी। (इफिसियों 1:13, 6:15)

- "तेरा परमेश्वर राज्य करता है!" यह उस सुसमाचार का आधार है, जो नए नियम में "राज्य के सुसमाचार" के रूप में बताया गया है।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यशायाह ने विजय के दो पहलूओं की भविष्यद्वाणी की है जिसे इस्राएल देखने की चाहत रखता था (यशायाह 52:10) :

- पराजय : यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि इस्राएल के निर्वासन के बाद, परमेश्वर *पूरी* तरह से उसके शत्रुओं को *प्रत्येक स्थान* पर पराजित कर देगा।

- छुटकारा : यशायाह ने भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर के लोगों का छुटकारा विश्वव्यापी और अन्तिम होगा।

यह विश्वास कि परमेश्वर का राज्य यीशु में अभूतपूर्व जीत को उत्पन्न कर देगा, उसके अनुयायियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था।

III. आगमन (28:17)

A. अपेक्षाएँ (29:14)

- **यह युग और आने वाला युग**

  पाप, दुख और मृत्यु का वर्तमान युग और धार्मिकता, प्रेम, आनन्द और शान्ति का भविष्य का युग।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यहूदी सम्प्रदायों में "इस युग" से "आने वाले युग में" स्थानान्तरित होने के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण थे, परन्तु बहुत से सम्प्रदाय सहमत थे कि एक विनाशकारी युद्ध होगा।

मसीह स्वर्ग के स्वर्गदूतों और परमेश्वर के लोगों का, परमेश्वर के मानवीय और आत्मिक शत्रुओं के ऊपर विजय प्रदान करने के लिए नेतृत्व करेगा। (निर्गमन 12:12; 1 शमूएल 5:1-12; यशायाह 21:9; हाग्गै 2:6-9; जकर्याह 9–12; यहेजकेल 38–39).

- **मसीही अपेक्षाएँ**

  यीशु के अनुयायियों ने परमेश्वर के राज्य की विजय के आगमन को अलग तरीके से देखना आरंभ किया।

  नए नियम के लेखकों ने माना कि यीशु ही प्रतिज्ञात् मसीह था।

  नए नियम में यीशु के मसीहारुपी शीर्षक :

  - **"मसीह" :**

    नया नियम यीशु को "मसीह" (इब्रानी शब्द *मिस्हाक* का यूनानी अनुवाद) के साथ लगभग 529 बार संदर्भित करता है।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- **" परमेश्वर का पुत्र " :**

  नया नियम 118 बार यीशु को "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में बताता है, यह दर्शाते हुए कि यीशु ही इस्राएल का वास्तविक राजा है।

- **" दाऊद का पुत्र " :**

  नया नियम 20 बार यीशु को " दाऊद के पुत्र" के रूप में बताता है, यह दर्शाते हुए कि यीशु ही दाऊद के सिंहासन का उत्तराधिकारी था।

यीशु के अनुयायियों ने यह विश्वास किया कि वह अनपेक्षित रूपों में इस युग से आने वाले युग में परिवर्तन को लाएगा। (मत्ती 13:31-32)

"उदघाटित युगान्त विज्ञान" : मसीह ने अपने कार्य को इस पृथ्वी पर पहले से ही प्रकट कर दिया है, परन्तु इसमें *अन्तिम* विजय अभी आना बाकी है।

परमेश्वर के राज्य के आगमन के बारे में नए नियम का दृष्टिकोण त्रि-स्तरीय है :

- उदघाटन

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- निरन्तरता

- अन्तिम विजय

B. त्रि-स्तरीय विजय (41:56)

1. पराजय (43:00)

- **उदघाटन**

राज्य के उदघाटन के प्रति यीशु की द्वि-स्तरीय रणनीति :

- यीशु ने परमेश्वर के आत्मिक शत्रुओं के ऊपर परमेश्वर के न्याय को प्रकट किया। (मत्ती 12:28-29)

- यीशु ने परमेश्वर की दया को परमेश्वर के मानवीय शत्रुओं के ऊपर विस्तारित किया। (यूहन्ना 12:31-32)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

क्रूस पर मसीह की बलिदानी मृत्यु की द्वि-स्तरीय रणनीति :

- यीशु ने मानवीय प्राणियों के ऊपर शैतान की शक्ति को तोड़ दिया। (कुलुस्सियों 2:15)

- यीशु की बलिदानी मृत्यु ने लोगों को पाप और मृत्यु से स्वतन्त्र कर दिया। (इफिसियों 4:8)

- **निरन्तरता**

  यीशु की कलीसिया लोगों के साथ नहीं, अपितु शैतान और उसकी अन्य बुरी आत्माओं के साथ युद्ध कर रही है। (इफिसियों 6:11-12)

  मसीह के अनुयायियों को चाहिए कि वे हम परमेश्वर की दया को उसके मानवीय शत्रुओं के ऊपर विस्तारित करें। (2 कुरिन्थियों 5:20)

- **शिरो-बिन्दु या पराकाष्ठा**

  जब मसीह का पुन: आगमन होगा, तो वह परमेश्वर के आत्मिक *और* मानवीय शत्रुओं को पराजित करेगा। (प्रकाशितवाक्य 19:13-15, 20:20)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. छुटकारा (55:17)

- **उदघाटन**

आश्चर्यकर्म उस राज्य की आशीषों को प्रस्तुत करते हैं जिसे यीशु इस पृथ्वी पर लेकर आया।

यीशु द्वारा सामाजिक न्याय पर दिए ध्यान ने राज्य की महत्वपूर्ण आशीषों का प्रतिनिधित्व किया।

परमेश्वर के राज्य के उदघाटन में सबसे बड़ी आशीष अनन्तकाल का उद्धार था। (कुलुस्सियों 1:13-14)

विश्वासियों पर पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना संसार में आने वाली आशीषों में से एक थी। (2 कुरिन्थियों 1:21-22)

- **निरन्तरता**

परमेश्वर निरन्तर उसकी कलीसिया को पवित्र आत्मा के वरदान भी देता है। (1 कुरिन्थियों 4:20)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह के अनुयायियों को चाहिए कि वे अपनी आशाओं को आने वाले राज्य की महान् आशीषों की ओर लगाए रखें। (इब्रानियों 12:28)

- **शिरो-बिन्दु**

  परमेश्वर के लोग राज्य की सभी प्रतिज्ञात् आशीषों का पूर्ण अनुभव करेंगे। (प्रकाशितवाक्य 5:9-10; 11:15)

परमेश्वर के शत्रुओं की पराजय और परमेश्वर के लोगों का छुटकारा मसीह में परमेश्वर के राज्य की विजय के आगमन का प्रतिनिधित्व करते हैं।

IV. सारांश (1:03:12)

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. परमेश्वर के राज्य के "शुभ-संदेश" का क्या अर्थ है?

2. उन दो मुख्य रूपों का वर्णन करो जिनमें पवित्रशास्त्र परमेश्वर के राज्य को दर्शाता है।

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. नए नियम में परमेश्वर के राज्य की विकसित होती हुई विशेषता क्या है? स्पष्ट कीजिए।

4. परमेश्वर के राज्य के आगमन की क्या-क्या अपेक्षाएँ थीं?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. परमेश्वर के राज्य की त्रि-स्तरीय विजय पर नए नियम का दृष्टिकोण क्या है?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. परमेश्वर के राज्य के शुभ-सन्देश के आशय वर्तमान परिस्थितियों में आपके जीवन को कैसे प्रभावित कर रहे हैं?

2. परमेश्वर की संपूर्ण सृष्टि पर अटल संप्रभुता है। हम इस सत्य का प्रत्युत्तर प्राकृतिक आपदाओं, बिमारियों, गरीबी, सताव, युद्ध और अन्याय जैसी कठिन परिस्थितियों में कैसे देते हैं?

3. किस प्रकार आपकी व्यक्तिगत असफलताओं ने मसीह के काम के प्रति आपके आभार को और अधिक गहरा कर दिया है?

4. जब हम परमेश्वर की अंतिम विजय और उसके शत्रुओं की हार की प्रतीक्षा करते हैं, आप किस प्रकार परमेश्वर के प्रति आशान्वित और विश्वासयोग्य रह सकते हैं?

5. आप किस प्रकार दूसरों को प्रोत्साहित कर सकते हैं कि वे मसीह के पुनरागमन के समय परमेश्वर के शत्रुओं पर अंतिम विजय के प्रति आशान्वित रहें?

6. ऐसी कुछ रुकावटों, संघर्षों, या बाधाओं के बारे में बताइए जिनसे परमेश्वर ने आपको छुड़ाया है। क्या उस छुटकारे ने दूसरों के प्रति आपकी सेवा करने के तरीके को बदला है? अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए।

7. किस प्रकार बाइबल का दृष्टिकोण “पहले से आ पहुंचा परन्तु अभी नहीं,” पतित जीवन में आपको विश्वासयोग्य मसीही जीवन जीने में सहायता करता है?

8. सुसमाचारों में बहुत से राजकीय शीर्षक हैं जिनका इस्तेमाल यीशु को परमेश्वर के राज्य का उदघाटन करने वाले के रूप में पहचानने के लिए किया गया है। आप किस प्रकार यीशु के राजकीय शीर्षकों का इस्तेमाल सुसमाचार प्रचार के साधन के रूप में कर सकते हैं?

9. जब हम परमेशवर के शत्रुओं से अंतिम छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे हैं, किस प्रकार इस दिन की बाट जोहना धैर्य के साथ आगे बढ़ने में आपको प्रोत्साहित करता है?

10. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2014 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org